तृतीय अध्याय

सुमनजी का प्रगतिवादी काव्य : सामान्य परिचय वस्तु विवेचन

तृतीय अध्याय

सुमनजीका प्रगतिवादी काव्य - सामान्य परिचय (वस्तुविवेचन)

आधुनिक काव्य जगत में डॉ शिवमंगलसिंह सुमन का एक विषिष्ट स्थान हैं। आप बने बनाये कवि नहीं हैं। आपकी प्रतिभा स्वयंभू हैं। किसी भी कवि का वास्तविक मूल्यांकन कोई सहज कार्य नहीं हैं, उसमें भी समकालीन कवि का मूल्यांकन तो बड़ा ही कठिन कार्य हैं।

कवि सुमनजी ने जब काव्यके क्षेत्रमें पदार्पण किया तब छायावाद एवं रहस्यवाद का युग था। इसलिए कवि की प्राथमिक जो रचनाएँ थी, वह रोमँटिकता की ओर झुकनेवाली थी। उनका प्रथम काव्यसंग्रह 'हिल्लोल' में प्रणयी भाव के चित्र है। इस काव्यसंग्रह में समय की चेतना और बदलती हुई सामाजिक व्यवस्था के अनुसार बदलती हुई भावना और विचारों की अभिव्यक्ति प्रतित हुई हैं। इसमें जीवन की विविध झाँकियाँ दिखाई देती हैं।

'हिल्लोल' कोई ठोसख सुनिश्चित काव्य का संग्रह नहीं हैं। उसमें यौवनावस्था, प्रणयी भावना, आवेग संवेग का चित्रण हैं। डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित के मतानुसार 'हिल्लोल' में कवि नियतिवादी भूमिका पर जीवन की क्षणभंगुरता का परिचय देता है' 1।

लेकिन उसके बाद 1950 में प्रकाशित हुआ 'जीवन के गान' काव्यसंग्रहमें उनकी रुमानी प्रवृत्ति क्रांतिकारी भावनासे प्रभावित हुई। वहीं से वे यही प्रार्थना करते हुए आगे बढ़ने लगे कि -

'इतिहास के पन्नों में
हो जाय अमर यह कुरबानी
मेरा पथ मत रोको रानी।' 2

क्योंकि जब 'जीवन के गान' के कविताओंकी रचना हुई, तब देशमें स्वतंत्रता संग्राम जोरोंसे चल रहा था। जब उस संग्राम की रणभरी बज उठी तब कवि रुमानी भाव का गुलाम कैसे रह सकते थे? जोशमें वह भी स्वतंत्रता संग्राममें कूद पड़े।

अर्थात डॉ. सुमनजी का सच्चा परिचय उनकी रचनाओंमें उपलब्ध हैं। अतः तीसरे अध्यायमें हम सुमनजी की सिर्फ प्रगतिवादी रचनाओंपर विचार करेंगे।

प्रगतिवाद का मूलाधार भारतेंदु काल माना जाता हैं। उस कालीन सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक

---

1. डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित - आज के लोकप्रिय कवि सुमन - पृष्ठ 8
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 69

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

चेतना में जो पूर्नमूल्यांकन प्रवृत्ति थी, उसेही प्रस्थान बिंदू कहते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत हैकि, मनुष्य लोकबध्द प्राणी है। उसकी अपनी सत्ता का ज्ञान तक लोकबध्द हैं। लोगों के भीतर कविता क्या किसी भी कला का प्रयोजन और विकास होता हैं।' 1

डॉ. शिवकुमार मिश्र यथार्थवाद का वास्तविक प्रस्थान बिंदू सन 1930-31 ई. मानते हैं। पहले के चिंतन को मार्क्सवादी विवेककी पृष्ठभूमि के रुपमें मिश्रजी स्वीकारते हैं। उनका कहना हैं, 'मार्क्सवादी कथन विवेकसे अनुप्राणित साहित्य एवं कला दृष्टि की सर्वप्रमुख स्थापना साहित्य एवं कला के ठोस सामाजिक एवं लौकिक आधार बल देते हुए सामने आयी थी। साहित्य एवं कला की प्रत्येक प्रकार की अलौकिक व्याख्या का इसके अंर्तगत निषेध था। छायावाद के गर्भसे सन 1936 ई. में प्रगतिशील साहित्य अथवा प्रगतिवाद के नाम से प्रचलित हुआ।' 2

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने प्रगतिवाद के बारेमें अपना काव्यसंग्रह 'जीवन के गान' में 'कुछ कहना आवश्यक था' इस शीर्षक के अंतर्गत कुछ ठासे मुद्दे रखे हैं।

'प्रगतिवाद को और अधिक स्पष्ट करने के लिए मैं यह कहुँगा की, प्रगतिवाद जीवन और साहित्य का नया दृष्टिकोण हैं। इसे अधिक सुबोध रुपमें रखने का प्रयत्न करुँगा कि,

1) प्रगतिवाद साहित्य को चिरगत्यात्मक एवं परिवर्तनशील समाज का एक अभिन्न अंग मानता हैं।

2) वह समाज संबंधोंमें और सामाजिक कार्यमें सौंदर्य तत्व की उद्भावना देखता हैं।

3) कार्य के लिए समाज की भावनाओं का संगठन करने के अपने पुराने गुण या तत्व को पुनः साहित्य की आत्मा के स्थानपर प्रतिष्ठित करता हैं।

4) सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के नाना रुपोंकी अभिव्यक्ति की तह में व्यक्त रागात्मक सहानुभूति समाज की उन शक्तियों के साथ रहती है, जो जीवन को एक उच्च सुखमय, सामूहिक और स्वतंत्र धरातलपर संगठित करने की क्षमता रखते हैं।

5) उनपकी शैली समाजवादी यथार्थवाद तथा समाजवादी रोमेंटिसिज्म की शैली हैं।

6) उसका दार्शनिक आधार विरोधजन्य गतिशील भौतिकवाद हैं। केवल जीवन और प्रकृति की गतिविधियोंको समझने का सबसे विकसित वैज्ञानिक दर्शन हैं, बल्कि उसे सचेत रुपसे बदलने का एक मात्र उपाय भी हैं।' 3

---

1. डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र - सुमनजीकी प्रगतिवादी कविताएँ - पृष्ठ 31
2. शिवकुमार मिश्र - यथार्थवाद - पृष्ठ 192
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 18

प्रस्तुत विचारों के माध्यम से हम कह सकते हैंकि, प्रगतिवादी धारा से प्रभावित कवि सुमन और अन्य कवियोंका एकमात्र उद्देश था, हमारे समाज में शोषण की वृत्ति रखनेवाले सामंतवादी, पूँजीवादीयोंको पहचानकर उनका तीव्र विरोध करना, एक नये समतावादी समाज की स्थापना करना था।

कवि सुमन छायावादी शैली अपनाकर [illegible] प्रणयी भावना के चित्रणमें अवश्य बड़े है, परंतु उनका दूसरा पथ भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे उनके विद्रोही वृत्ति के दर्शन होते हैं। उनके सभी काव्यसंग्रह अपने पूरे सामर्थ्य से प्रगतिशील विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अतः इस अध्यायमें सुमन जी के प्रगतिवादी रचनाओंका प्रवृत्तिसंगत विवेचन हम करेंगे। प्रगतिवादी धारा मार्क्सवादी या साम्यवादी धारा से प्रभावित होने के कारण समाज के निम्न स्तर के लोगोंपर होनेवाले अन्याय की ओर से आवाज उठने लगा, सभी श्रमिक वर्ग का पक्ष लेकर लोगोंको जागृत करने का कार्य कवियोंने हाथमें ले लिया। इसमें डॉ. सुमनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अतः सुमन की प्रगतिवादी रचनाएँ इस प्रकार -

1. जीवन के गान
2. प्रलयसृजन।
3. विश्वास बढ़ता ही गया।
4. ~~मिट्टी की बारात।~~ वाणी की व्यथा

इस अध्यायमें सुमनकी प्रगतिवादी कविताओंका विश्लेषण प्रगतिवादी विचारधार के विशेषताओं के आधारपर हम करेंगे। सुमनजी का काव्य समग्र रुपसे प्रगतिशील विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता हैं। मूलतः मार्क्सवादी विचारधार के आधारपर इसमें समाज विकास तथा परिवर्तन की व्याख्या की गई हैं।

1. प्राचीन रुढ़ियाँ तथा वर्गभेद का विरोध।
2. आर्थिक और सामाजिक शोषण के प्रति विद्रोह।
3. आर्थिक साधन तथा कलासंबंधी विचार।
4. रुस और मार्क्स का गुणगान।
5. शोषकों के प्रति आक्रोश।
6. शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति और क्रांतिका संदेश।
7. सामाजिक समस्याओंका विश्लेषण।
8. आस्था और विश्वास का स्वर।

9. साहित्यकारोंका गुणगान

10. जगत की उत्पत्ति एवं उत्थान और पतन संबंधी विचार।

1. **प्राचीन रुढियों तथा वर्गभेद का विरोध -**

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने मनुष्य जीवन के विकासमें रुढ़ियाँ, अंध विश्वास को बाधक माना हैं। समाजमें व्याप्त ये रीतिरिवाज, अंधविश्वास जनता के प्रगति के पथपर अवरोध तो करती है, साथ ही उसके द्वारा निर्माण होनेवाली विषमता मानवता के खंडित कर उसे टुकडोंमें बाँट देती हैं। अपना काव्यसंग्रह विश्वास बढता ही गया' में 'मैं मनुष्य के भविष्य से नहीं निराश' में वह कहते हैं -

'आज आसुरी बनी समस्त सभ्यता
गिर पडा तुषार लूट गई लता-लता
छिन्न भिन्न सी ममत्व सत्व श्रृंखला
खो गई कहीं मनुष्य की मनुष्यता।' 1

जाति भेद के बारेमें सुमन जी कहते हैं -

'जाति धर्म के भेद कहाँ सब
बँधे भूख की डोर
हिंदू मुस्लिम खींच रहे पर
अपनी अपनी ओर।' 2

हम इस जातिधर्म के बंधन को त्यागेंगे तो हमें प्रतित होगा की, एक ही परमात्मा हम सबमें विद्यमान हैं। एक के हृदय से निकला हुआ प्रेमधागा अनेकोंको बाँध लेता हैं। जैसे एक दीपक से कोटि दीपक जलाये जाते हैं। आज इन विषमताओं के बंधन में जकडी हुई मानव सभ्यतासे आकाश, धरती और सभी मनुष्य तथा प्राणी जाति दुखी हैं। कवि इसे बदलना चाहता है और नए समाज की स्थापना करना चाहता हैं। कवि इसके लिए लागोंको ही दोषी ठहराता हैं। जिस तरह अंग्रेजी शासन हमपर अन्याय कर रहा हैं। जातिभेद, धार्मिक दंगे निर्माण कर रहे हैं, हम इनका साथ देते हैं, हम भी उतने ही जिम्मेदार हैं -

'ध्यान रहें
सब पाप तुम्हारे ही सिर होगा
दलित विश्व की भूख, गरीबी परवशता
क्योंकि आज तुम केंद्र बिंदु हो उसी तरह

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 9
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 35

जिसतरह ब्रिटीश साम्राज्यवाद यह
प्रतिनिधि आज विश्वंभर के
अन्यत्र दमन का, नृशंसता का।' 1

आज समाजमें श्रमिक और निम्न स्तरके लोगोंकी स्थिति दयनीय हो गयी है। क्योंकि ऊँचे वर्ग के लोग है उनके कारण इन लोगोंको पशुवत जीवन व्यतित करना पड़ता हैं। अतः उनकी हालत देखकर कवि की अंतरात्मा कराह उठती हैं -

'आ रही दूर चौमहले से
मंजीर नूपुरों की खन-खन
महमहा रही खस की छन छन
इस ओर पडी खाना-बदोश
मेहनतकश मानव की पाँति
फुटपाथों की चट्टानों पर
जो काट रही अपनी रातें।' 2

कवि सुमन अपने प्रगतिवादी विचारोंको वाणी देते हुए समाज की हीनदीन दशा का हृदयद्रावक और मार्मिक चित्र प्रस्तुत करतें हैं। वह कहते हैं - समाजमें कितनी असमानताएँ हैं। एकतरफ मानव पेट की आग शांत करने के लिए स्त्रीको बेच रहा है, तो दूसरी ओर धनिक वर्ग मस्त होकर निकृष्ठ कर्तव्य का पालन करता हैं।

जीवन के इस विषम परिस्थिति और असमानता के बारेमें कवि कहता हैं -

'घातक समाजमें मानवता
जब लुप्तप्राय हो जाती है
बेकस, असहाय निरीहों की
जब हाय हाय छा जाती है
मानवता का स्वर उँचा हो
वह राम चाहता है जीवन
तपत्याग चाहता हैं जीवन।' 3

कवि कहते हैंकि संसारमें एक ओर रासरंग या आनंदवैभव है, सजे सजाये मदिरागृह है तो दूसरी ओर भूख की ज्वाला जल रही हैं। एक ओर वैभवसंपन्न साम्राज्य हैं, तो दूसरी तरफ अभावग्रस्त मनुष्य की चलती फिरती लाशे नजर आती हैं। कवि इन विभिन्नताओं को दूर करके एक नए समाज की

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 31
2. डॉ. सुमन - पलयसृजन - पृष्ठ 8
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 4

रचना करना चाहता हैं। भारतमें जब जब भी आपसमें फूट हुई तो इसका लाभ उठाकर विदेशियोंने हमपर आक्रमण किया। आपसी भेदभाव का वर्णन करते हुए कवि कहतें हैंकि -

'प्रांत जातीयता भाषा के भेद बज्र होंगे
अगर न आज हुए एक तो फिर कब होंगे
क्योंकि संसार नये सिरे से बसाना है
मिटेंगे आज क्योंकि मिटने को मिटाना है।' 1

स्वातंत्र्य मिलने के बाद भी लोगोंमें व्याप्त भेदभाव को देखकर कवि कहता हैंकि हमें सब कुछ भूलकर देश को आगे बढ़ाना है। ऐसा सुनहारा अवसर फिर कभी न आयेगा क्योंकि आजादी कितने युगोंके बाद प्राप्त हुई हैं। फिर भी आज का जीवन महँगाई, तबाही, घुटन और छटपटाहट से भरा हुआ हैं। इसलिए सत्ता का उपयोग स्वार्थ के लिए न करकें जनता में शांति और प्रेम का बीज बोना हैं।

1975 में उत्तर भारतमें भयानक सूखा और दयनीय अकाल से त्रस्त जनता ने जब नमाज-पूजा और आडंबरों का आश्रय लिया। इसकी कटु आलोचना करते हुए कहते हैं कि -

'व्यर्थ स्वर्ग अपवर्ग
अनासक्ति मुक्ति युक्ति
थोथी पूजा नमाज
पोथी मात्र रह गई
गाथाएँ पुराणों की
नोन तेल रोटी की
जुगाना ही बड़ा जोग, ब्रम्हभोग
जाने कहाँ दीनबंधु
करुणानिधि प्रणत पाल।' 2

कवि का कहना हैं कि, वर्तमान समाज बाह्यआडंबरों पूजा प्रार्थना नमाजमें व्यर्थ ही अपना वक्त जाया करता हैं। इतने समयमें मेहनत का काम करके पेट की आग को शांत किया जा सकता हैं।

इसप्रकार की विषम परिस्थिति देखकर समाजके नेता लोग कुछ करते नहीं, जनता के सामने दो चार रसभरी बात करके उनका मन बहलाने की कोशिश करते हैं। ऐसे दोहरे मुखौटेवाले समाज नेताओंका कवि पर्दाफाश करना चाहता हैं। ये लोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखते रहते हैं, दूसरोंका कुछ भी हो वह भले ही भूखे रह जायें, उनके पास रहने के लिए घर या पहनने के लिए कपड़ा हो न हो।

---

1. डॉ. सुमन - मिट्टी कि बारात - पृष्ठ 150
2. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 71

इसके तरफ आनाकानी करते हैं और समाजसेवा जैसा पुनीत कार्य छोड़कर सिर्फ अपनी जेब भरने का काम करते हैं।

प्रगतिवादी विचारधार के लोग परिवर्तनमें विश्वास करते हैं। खोखली परंपरा और आडंबरोंपर वह विश्वास नहीं करते। कवि सुमन भी मूर्तिपूजा पर विश्वास नहीं करते और पत्थर की मूर्ति से वरदान भी प्राप्त नहीं करना चाहते। मंदिर की देखभाल करनेवाले पुजारी पंडे, भगवान की पूजा के बहाने से इतना धन इकठ्ठा करता हैंकि, उनकी दो पीढ़ियोंका गुजारा आराम से हो सकता हैं। इसलिये कवि कड़ी मेहनत और ईमानदारी पर विश्वास रखता है।

कवि इन लोगों के बारेमें कहता हैं -

'दोनों के नेतागण बनते
अधिकारों के हामी
किंतु एक दिन को भी
हमको अखरी नहीं गुलामी
दानों को मोहताज हो गए
दर दर बने भिखारी
भूख, अकाल, महामारी से
दोनों की लाचारी
आज धार्मिक बना
धर्म का नाम मिटानेवाला
मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझानेवाला।' 1

विदेशी पूँजीवादी और साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने अपने शोषण शासन की सुविधा के लिए हिंदू-मुस्लिम के बीच कलह की आग लगायी और पाकिस्तान भारत का विभाजन हो गया। जिन दोनों जातियों के भाईयों ने एक होकर अपनी जानपर खेलकर देश को आजादी दिला दी, वहीं आज आपसी स्नेहभाव को भूलाकर एक दूसरे की जान लेने पर तुले हुए हैं। एक दूसरे अपने हक की माँग के लिए आपसमें मर मिटना चाहते हैं और संघर्ष निर्माण करनेवाला पंच बनकर झगड़े का फैसला करता हैं। देश इसी संघर्ष की आगमें झूलसता है, उसे बुझानेवाला कोई नहीं हैं। इसी विषमता रुढ़ियोंको कवि तोड़ना चाहता हैं।

डॉ. सुमन समाजमें व्याप्त वर्णभेद, वर्गभेद अंधविश्वास थोथा पूजापाठ, नमाज, प्रार्थना तथा रुढ़ परंपराओंको देश के विकासमें बाधक मानेते हुए देशके विकास के लिए उसे उखाड़कर फेंक देना चाहता

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 53

हैं। इसके लिए क्रांतिका पक्ष अपनाना चाहिए।

मार्क्सवाद के अनुसार सच्चा और जीवित साहित्य सामाजिक क्रांति के आधारपर वर्गहीन समाजकी स्थापना करनेमें सहायता करनेवाला प्रबल अस्त्र हैं।

2. आर्थिक और सामाजिक शोषण के प्रति विरोध -

'वर्ग संघर्ष का मूल कारण हैं आर्थिक असमानता। शोषक वर्ग की संचय वृत्ति विपन्न के श्रमपर अपनी पूँजीको बढानेमें प्रयत्नशील रहती है और समाज के प्रत्येक पहलू पर आर्थिक परिस्थिति का प्रभाव रहता हैं।' 1

मार्क्सवाद के विचारानुसार इतिहास के प्रथम चरणमें समाजमें समानता का राज था। जातिभेद, वर्णभेद की कोई पध्दति नहीं थी। दूसरे परिवारमें सरदार या मुखिया का राज हुआ और इसी युगमें संपत्ति पर कुछ बलवान लोगोंका राज हुआ और धीरे धीरे तीसरे चरणमें सामंतवादी व्यवस्था उदयन्मुख हुई। इससे समाजमें चार वर्णोंकी स्थापना हो गई। एक वर्ग उन बुध्दिमान लोगोंका था जो सामंतों की कृपापर जी रहा था।

'दूसरा वर्ग उनके नौकरों का था और निम्न कोटि के लोगोंका तीसरा वर्ग था, जो भूमिहीन था, आर्थिकता का उनके पास कोई साधन नहीं था। यह वर्ग पूर्ण रुपसें सामंतो की अनुग्रह पर अवलंबित हैं।' 2

आर्थिकता के कारण समाजमें वर्गोंका निर्माण हुआ। इतिहास के अगले चरणमें उद्योगोंका विकास हुआ और देशमें एक पूँजीवादी वर्ग निर्माण हो गया। सामंतोंने भी उनकी तरह कारखाने लगा दिये और पूँजीवादियोंके कोटीमें आ गये। इनका दुष्चक्र इतना व्यापक पैमानेपर हुआ कि, सामान्य लोगोंकी हालत बदतर हुई। उनका जीवन कीड़े मकौड़े सा बन गया।

मार्क्सवाद के विचारानुसार अबतक समाजमें चार प्रकार की सामाजिक व्यवस्था प्राप्त हुई हैं। पहले आदम जाति थी, उसमें वे स्वतंत्र तो थे, समता का कोई प्रश्न नहीं था। दूसरी अवस्था दास अवस्था जिसमें शक्तिवान लोग शक्तिहीनोंपर राज करते थे। इसके द्वारा जो नयी आर्थिक व्यवस्थाने जन्म लिया जो आज भी प्रचलित हैं। कुछ देशोंमें पूँजीवाद समाप्त होकर समाजवाद की स्थापना हुई। इसी

---

1. भक्तराम शर्मा - मार्क्सवाद और साहित्यिक सिध्दांत - पृष्ठ 29
2. भक्तराम शर्मा - मार्क्सवाद और साहित्यिक सिध्दांत - पृष्ठ 29

नयी व्यवस्था को साम्यवाद कहते है। इसलिये मार्क्सवादी विचारधारा अर्थ का पूँजीवादी और सामंती ढाँचा समूल नष्ट करके सर्वहारा क्रांति के द्वारा साम्यवादी समाज की व्यवस्थापर जोर देता हैं। इसी साम्यवादी विचारोंसे प्रेरित होकर कवि शिवमंगलसिंह सुमन ने अपने काव्यसंग्रहोंको लिखा।

सुमन जी की धारणा हैंकि, पूँजीवादियों और सामंतवादियों के द्वारा अत्याचार का शिकारी समाजमें भूखे-प्यासे लोग सड़ी गली व्यवस्था को उखाड़कर नुतन संसारका निर्माण करना चाहता हैं। उनका यह संसार मानवतावादी मूल्योंकी स्थापना करेगा। जिसमें आर्थिकता सामाजिकता और व्यावसायिक दृष्टिसे सबको समान अधिकार होगा।

डॉ. सुमन ने शोषित मानव को रस्ते के धूलमें पड़ा हुआ पत्थर कहा हैं। समाज के उच्च वर्ग के लोग गरीब असहाय लोगोंकी हमेशा उपेक्षा करते रहते हैं;

'मैं पद लुंठित पद मर्दित बन
आया हूँ जीवन के पथ पर
परवश अपनी सीमाओं में
मैं मूक व्यथाओं का घर हूँ
मैं कहूँ कहाँ तक सुनने को
गाथा कोई तैयार नहीं
मैं इस शोषण की जगती में
जर्जर समाज का नत शिर हूँ
मैं पथका कंकड पत्थर हूँ।' 1

कवि सुमन का मत हैंकि, समाजमें जो लोग आर्थिक दृष्टिसे सुसंपन्न हैं, वहीं लोग दूसरों के अभावोंको नहीं देखते उनकी दयनीय स्थिति की कहानी सुनने के लिए उनके पास कोई वक्त नहीं हैं। संपत्तिका एक के पास होना ओर दूसरे के पास फूटी कौंडी भी न होना कितनी असमानता हैं। इसी खोखले और जर्जर समाज को कवि समूल नष्ट करना चाहता हैं। इसी अन्यायभर पूँजीवादी राज्य को समाप्त कर समाजवादी समाज की स्थापना करना चाहते हैं।

'मार्क्सवाद से अन्यायग्रस्त असमानता और दकियानूसी प्रवृत्ति के विरुध्द लडने की अनेक देशोंने प्रेरणा ग्रहण की। मार्क्स को गरीबों का देवता के रुपमें लोगोंने देखा। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद और अतिरिक्त मूल्य सिध्दांत की वैज्ञानिकव्याख्या प्रस्तुत की। इस संदर्भ में मार्क्सवाद पिछड़ी दुनियाके देशोंके लिए मार्गदर्शक और उत्प्रेरक साबित हुआ।' 2

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 20
2. हरिवंश साप्ताहिक पत्रिका - पिछडे समाज के संदर्भमें मार्क्सवाद - पृष्ठ 66

समाज के आर्थिक आधार की कल्पना करते हुए कवि जब समाज की स्थिति देखता हैं, तो उनका हृदय उद्विग्न हो जाता हैं -

'हंत भूख मानव बैठा
गोबर से दाने बीन रहा है
और झपट कुत्ते के मुँह से
जूठी रोटी छीन रहा है
हाय नहीं यह देखा जाता।' 1

लेकिन इन लोगोंमें अन्याय के खिलाफ कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हैं। अतः यह मानव मजबूर होकर उनका जयजयकार करता रहता है, उन्हें सबसे बड़ा दानी मानता हैं। जैसे -

'भाग्य लूटनेवाले को
वह धर्मवान भगवान बनाता
जीवन हाय हराम कर दिया
उसकी जयजयकार मनाता
जिसने सब कुछ छीन लिया
उसको ही वह दाता बतलाता
हाय नहीं यह देखा जाता।' 2

ऐसी हालत देखकर कवि मन भारी हो जाता है। पेट की आग मनुष्य को इतना नीच बना देती हैकि, स्वयं पिता अपने पुत्रके हाथ से रोटी छीनकर खाता हैं।

ऐसी दशा को देखकर कवि की भावना उमड़ आती हैं। 'हाय नहीं देखा जाता' इसी तरह के भाव कवि के 'यह किसका कंकाल पड़ा है', कविता में भी मिलता हैं -

'उफ कितना भयावह लगता
सजल पुतलियाँ फिरा रहा हैं
आगे के दो दाँत निकाले
यह हम सबको घिरा रहा है
निश्चय ही शोषक वर्गों का
चिर प्रतिशोधी काल पड़ा हैं
यह किसका कंकाल पड़ा है।' 3

उपर्युक्त सभी विवेचन से हम यहीं जान जाते हैंकि, ऐसी दशा के मूलमें पूँजीवादी, सामंतवादी

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 87
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 87
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान पृष्ठ 96

और साम्राज्यवादी है। 'पूँजी' इन लोगोंतक ही सीमित हैं। इसी कारण समाज के प्रत्येक वर्ग को अपने श्रम का सही मूल्य नहीं मिल पाता। इनके गलत नियमोंके कारण समाज की रचना बिखर जाती हैं। स्वातंत्र्य मिलने के पूर्व यह स्थिति मजबूत तो थी लेकिन आज भी इसका रुप देखनेको मिलता हैं।

कवि सुमन एक उदाहरण देते हैंकि, बंगालमें भयानक अकाल पडा हुआ था, लोगों के पास खाने के लिए और तन को ढाँकने के लिए कुछ भी नहीं हैं मगर इन शासनकर्ताओं को कुछ फर्क नहीं पड़ता उदा. -

'हड्डी के ढाँचो पर गिनते
   रुपयों के अंबार
बच्चों की लाशों पर करते
   पूँजी का व्यापार
ये भी वैसे ही मानव थे
   जिनके सुख के ठौर
अब भी चलते होंगे जिनके
   घर मदिरा के दौर।' 1

अकाल पीड़ित जनता कुत्ते से भी बदतर मौत मर रही हैं लेकिन धनिक वर्ग अपनी ही मस्तीमें मग्न हैं। कवि सुमन अर्थ के इस आधारपर समाज की इस दयनीय दशाके सदैव विरोधी रहे हैं। उनका मत हैंकि, विषमता की इस खाई से पारकर संसारमें सबको भोजन वस्त्र, पानी की सुविधा देनी ही होगी।

अपनी प्रसिध्द कविता 'जल रहें है दीप जल रही हैं जवानी' नामक कविता में कविने अर्थाधार और सामाजिक चेतना को विषयमें अपना मत व्यक्त किया हैं।

जयशंकर प्रसाद 'प्रलय की छाया', निराला की 'राम की शक्ति पूजा', पंत की, 'परिर्वन' कविता के कोटि में प्रगतिवादी युग की यदि कोई कविता रखी जा सकती है तो वह 'जल रहे हैं' दीप जल रहीं जवानी यह हैं।' 2

जैसे -

'हजारों आसमंतो को लूटकर वह खिलखिलाता था
स्वयं सूरज तमस से तप गया था, तिलमिलाता था
सभी भूखे थे, नंगे थे, तबाही तबाही थी
मगर अन्याय का प्रतिरोध करने की मनाही थी
किसी ने न्याय माँगा समझलो उसकी आफत थी
न जीने की इजाजत थी, न मरने की इजाजत थी।' 3

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 8।
2. प्रभाकर श्रोत्रिय - सुमन : मनुष्य और स्त्रष्टा - पृष्ठ 101
3. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 105

और ऐसी भीषण परिस्थिति से विद्रोह करनेवाले के हाथमें कोई हथियार न था, सिर्फ था एक आदर्श जीने जिलाने का।

'उधर थी संगठित सेना अनेकों यंत्र दूर्धर थे
इधर हुंकारसे हाथोंमें केवल पेड़ पत्थर थे
मगर था एक ही आदर्श जीने का जिलाने का
विगत जर्जर व्यवस्था को स्वयं मिटकर मिटाने का।' 1

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने मानव जीवन के विकासात्मक परंपरा का वर्णन किया हैं। दीपावली पर लिखे गये प्रस्तुत पद्यमें कवि कहता हैंकि, प्रलय के बाद चेतना का विकास हुआ और मनुष्य ने सामाजिक संगठन किया। जब पृथ्वीपर शोषकों, असामाजिक तत्वों, दानवों का साम्राज्य आया तब धरती पुत्रोंने राम का रुप धारण कर सारी दानवी सत्ता को नष्ट किया।

दानवी सत्ता नष्ट हो गयी। डॉ. सुमन अपनी शुभ हो नव जनवाणी कवितामें कहते हैंकि -

'घोर निराशमय दुर्दिन में
मानव का विश्वास अमर हो
वहिन बाढ झंझा उल्कामें
डिगे न जग के प्राणी
शुभ हो नवजन वाणी
शांति स्नेह समता अर्जमें
नवयुवक का बलिदान अमर हो
जन जन की ज्वाला से
पिघले युग प्रतिभा पाषाणी
शुभ हो नव जनवाणी।' 2

स्वतंत्रता मिलने के पूर्व किए गए वादोंके प्रति सुमनजी दुखी हैं। सभी ऐसे समझते थे कि आजाद भारतमें सबको सच्चा न्याय और जीनेका समान अधिकार मिलेगा। परंतु समाज के कुछ धूर्त लोगोंने इसका नाजायज फायदा उठाया, इसी कारण समाजको भीख माँगनी पडी। इसका प्रमुख कारण है - अर्थ वितरण समाजमें सही नहीं हुआ।

'सामाजिक उत्पादन के सिलसिलेमें मनुष्य ऐसे संबंध स्थापित करते हैं जो उनकी इच्छा अनिच्छापर निर्भर नहीं होते। ये उत्पादन संबंध किस तरह के है, यह इस बातपर निर्भर है कि,

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 105
2. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 72

उत्पादन की भौतिक शक्तियाँ किस हद तक विकसित हुई हैं। इस उत्पादन संबंधोंका अभाव समाज आर्थिक ढाँचा कहलाता है। यही वह वास्तविक आधार है, जिसके उपर कानून और राजनीतिका महल खड़ा किया जाता हैं। इसी आधार के अनुकूल सामाजिक चेतना के विभिन्न रुप होते हैं।' ।

अर्थाधार एवं सामाजिक चेतना पर जब हम विवेचन करते हैं, तो देखते हैंकि, नवीन वैज्ञानिक शोध के कारण उत्पादन के नये साधनोंका प्रयोग कारखानोंमें होने लगा। मूलतः व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का जन्म हुआ। जिसके परिणामस्वरुप एक ओर पूँजीपतियोंका शासन फैला तो दूसरी ओर मजदूरोंकी गरीबी भी बढ़ गयी। मजदूरोंके श्रमशोषण के कारण उनमें असंतोष फैल गया। आज हम देखते हैंकि, आर्थिक आधार को लेकर समाजमें एक नयी चेतना जागृत हुई है जिससे निम्नस्तर के लोग भी अपने अधिकारोंके प्रति जागृत हुए हैं।

3. आर्थिक साधन तथा कलासंबंधी विचार -

'मार्क्सवाद एक क्रांतिकारी जीवन दर्शन हैं। कार्ल मार्क्स ने दर्शन के क्षेत्रमें व्यक्ति के स्थानपर समाजको स्थापित कर एक युगांतकारी परिवर्तन उपस्थित किया। मार्क्सवाद वह है जिसने जीवन समाज एवं सृष्टिको द्वंद्वात्मक भौतिकवादी व्याख्या प्रस्तुत की, सर्वत्र गतिशीलता और विकास देखने की इच्छा उसे हैं। मार्क्सवाद मानता हैंकि, मनुष्य समाज के ऐतिहासिक विकास को नहीं बाँध सकता, जिस सत्यतक मनुष्य जाति की आगामी लाखों पीढ़ियाँ पहुँचेगी उसतक आजही किसी एक मनुष्य के लिए पहुँच सकना संभव नहीं हैं।' 2

'काव्यमें संप्रेषण की महत्ता को स्वीकार करने के साथ ही हम कला विधान का महत्त्व स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि शिल्प अभिव्यंजना को अधिक स्पष्ट प्रभावशाली एवं गंभीर रुपमें हमारे सम्मुख रखता हैं। क्रांति, सामाजिक यथार्थ भावलोक की निरर्थकता, सामूहिक विद्रोह आदि की अभिव्यक्ति भी कला के सहयोग से अधिक समर्थ सशक्त और सार्थक रुपसे की जाती हैं।' 3

काव्य कला वैचारिक धरातलमें ही आती हैं। मार्क्स और एंगेल्स का विचार हैंकि, आर्थिक व वैचारिक दानों स्तर एक दूसरे से प्रभाव ग्रहण करते हैं। काव्य कला के संबंधमें उनका कहना हैंकि, काव्यकला का जन्म भौतिक अथवा आर्थिक धरातल के नुसार होता हैं। तथा उनका प्रयोजन भी

---

1. रामविलास शर्मा - मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य - पृष्ठ 27
2. रवींद्रनाथ मिश्र - डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन की कृतियोंका समीक्षात्मक अध्ययन - पृष्ठ 62
3. प्रभाकर श्रोत्रिय - सुमन : मनुष्य और स्रष्टा - पृष्ठ 109

सामाजिक जीवन होता है, मार्क्स के मतानुसार वैचारिक धरातल से सामाजिक जीवनमें क्रांति लाई जा सकती है।

डॉ. सुमन इस बात से सहमत हैंकि, कवि अपने विचारों के द्वारा समाजमें क्रांति ला सकता है, परिर्वतनला सकता हैं। अपने आपको जान लेने की रागमय अनुभूति जैसी उनकी प्रणयी गीतों में व्यक्त हुई है, इसी तरह संसारको समझने बूझने की चेतना भी व्याप्त हैं।

'अपने आप जीवन पथपर तिलतिल
स्मृतियों की ज्वालामें जल जल
पीड़ा की गोदीमें पल पल
मुझको यौवन अभिसार मिला
दुखसेही मुझको प्यार मिला।' 1

वेदना पीड़ा व्यथाको साहित्यमें विशेष स्थान है। कवयित्रि महादेवी वर्मा ने अपनी अधिकांश रचनाओंको वेदनामें ही उतारा हैं। सुमन जी भी कविता के प्रवाह को स्वयं की व्यथा के रुपमें स्वीकार करते हैं। बादमें वह व्यथा समस्त समाजके अंतर्गत दिखाई देती हैं।

करुणा और वेदना की बातको कवि ने आदि कवि वाल्मिकी से प्रेरणा ली है -

'सोचता हूँ आदि कवि क्या दे गए हैं हमें भाती
क्रौचिंनी की वेदना से फट गई थी हाय छाती
जबकि पक्षी की व्यथा से आदि कवि का व्यथित अंतर
प्रेरणा कैसे न दे कवि को मनुज कंकाल जर्जर
अन्य मानव और कविमें हैं बड़ा कोई न अंतर
मात्र मुखरित कर सके, मन की व्यथा, अनुभूतिके स्वर
वेदना असहाय हृदयोंमें उमड़ती जो निरंतर
कवि न यदि कह दे उसे तो व्यर्थ वाणी का मिला स्वर।' 2

कवि कहते हैंकि, क्रांच और क्रौचिनी में एक के वध से कवि वाल्मिकी के हृदयमें करुणा उत्पन्न हुई। और उस करुणा से द्रवीभूत होकर उन्होंने रामायण की रचना की। जिसमें वेदना और करुणा का जगह जगह पर वर्णन किया हैं।

उपर्युक्त कथन के अनुसार आजके कवियोंमें भी समाज में फैले हुए नर कंकालोंको देखकर दया, करुणा, वेदना उत्पन्न होनी चाहिए। यदि ऐसा होगा तो अवश्य ही वाणीद्वारा समाजमें क्रांतिका आगमन होगा।

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 3।
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 4

दूसरे महायुध्द के समयमें भारतमें आजादी की लहर फैल गयी थी। इसका प्रभाव पूरे भारतपर था। अंग्रेजों के दूषित नीतिनियमों के कारण समाज का आर्थिक ढाँचा अस्त-व्यस्त हो गया। इस विषम परिस्थितियोंमें शिक्षा के प्रति लोगों के मनमें अरुचि पैदा हो गई।

'क्या शिक्षा का उपयोग यहाँ
है हाय हाय का शोर जहाँ
मेरी आँखों के आगे तो
जगती के सुखदुख मँडराते
मुझको यह पाठ नहीं भाते।' ।

जिस समाजमें अभावग्रस्त परिस्थिति हैं, वहाँ शिक्षा को महत्व नहीं मिलेगा। मार्क्सवादी आर्थिक आधार को कला के ठोस भूमि के रुपमें स्वीकार करते हैं। समाजकी त्रस्त व्यवस्था को देखकर शिक्षा के प्रति अरुचि पैदा हो जायेगी। इस प्रकार कला का समाज के आर्थिक आधारपर गहरा प्रभाव पड़ता हैं। कला से हम देश व समाज के भूत और वर्तमान स्थितियोंसे परिचित होते हैं।

कवि सुमन समाजगत विकृतियों और आर्थिक वैषम्य को देखकर वर्तमान कवियों की अवहेलना करते हैं, उनका कहना हैंकि, जिस करुणा से द्रवीभूत होकर वाल्मिकीने रामायण की सुंदर रचना की है। आज वहीं करुणा सारे समाजमें भी विद्यमान हैं, परंतु इसे देखनेवाले कवि क्या कर रहें हैं। वे सुंदर महलोंमें बैठकर आनंद का उपभोग कर रहे हैं और फिर आजकल की कविताएँ कमरे के भीतर ही कर रहे हैं, उसे खुली हवा लगने ही नहीं देते और उसका पठन सोफेपर बैठकर किया जाता हैं।

कवि सुमन का मत हैंकि, जब तक हम समाज की निम्न स्तरपर नहीं उतरते और लोगोंके दुख-दर्द नहीं सुनते तब तक हमारे हृदयमें दयाभाव या परोपकार की भावना नहीं उभर सकेगी और इस पर ध्यान न देनेवाले कवि का जीवन एक शाप है, उसे जीने को कोई अधिकार नहीं हैं।

कवि कहते हैं -

'इस ओर असंख्य अभागों की
टोली थी, दलबल साज रही
उस ओर स्वार्थ सत्ताधारी
सकलों पर भीषण गाज ढही
पर तुम अपने अभिसारोंमें
गिनते थे तारों की पलके

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 36

आश्चर्य, तुम्हारे सरस कर्ण सुन पाए हाहाकार नहीं
हो गए बधिर जब बलिदानी, निकला पथसे करता झनझन
इस जीर्ण जगत के पतझरमें
अभिशप्त तुम्हारा कवि जीवन।' 1

ऐसी स्थिति में कवि की वाणी समाज को सशक्त साहित्य देनेमें सफल नहीं हो पायी हैं। समाजको नई दिशा देने के लिए कवि को ही अपनी वाणी की माध्यमसे क्रांतिका स्वर उद्‌घोषित करना होगा।

लेकिन सुमन जी इस धरती के कवि है, जन कवि हैं। साहित्य का जन्म ही समाज के लिए होता है, जीवन से ही वह उद्‌भूत होता है और जीवन को सुंदरम की ओर ले जाता हैं।

'सोने की सुंदर देह आत्मा जर्जर
सागरमें प्यासी मीन मेघ आडंबर
है कला कला के लिए व्यंग्य जीवन
उपर चमकीला कलश, नींवमें खँड़हर।' 2

कवि मानता हैंकि कला जीवन के लिए है, अन्यथा नींव ही खंडहर हो जायेगी। जीवन के उच्चतर मानवीय मूल्योंकी ओर उन्मुक्त करना कला का लक्ष्य हैं। उसमें लोकमंगल की भावना आवश्यक हैं। नहीं तो हम शरीर को कितना भी चमकदार क्यों न बना ले लेकिन आत्मा जर्जर हो जायेगी।

सुमन जी अपनी वाणी से शोषित निरीह और अभावग्रस्त लोगोंको उतारना चाहते हैं। उनका कथन हैंकि, अगर इन लोगों को वाणी नहीं दे सका तो सारी पूजा व्यर्थ हो जायेगी। ऐसे लोगोंमें मूल्योंकी स्थापना करके ही मैं अपना जीवन सार्थ बना सकुंगा। अगर ऐसा नहीं कर सका तो सर्व साधना बेकार हो जायेगी।

कवि के अभिशापमय जीवन के लिए वह स्वयं कविको जिम्मेदार मानते हैं। जो कवि अपने युगधर्म को भूलता हैं तब उसका जीवन अभिशापमय तो हैं। जब रुढ़ियाँ युगीन मान्यताओंको त्यागकर संसार की नई दिशामें गतिशील हैं - तब

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 12
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 60

'उपर पूँजीवादी समाज
नीचे शोषित जनता का स्वर
तुम आँख उपर कर चलते
मिट्टी जाती है खिसक इधर
इस तरह प्रतिक्रिया और क्रांति
दानों के बीच त्रिशंकु बने
तुम बना मिटाया करते हो
अपनी आशाओं के खंडहर
अपने ही अंतर का जाला बुन बुन कर चारों ओर विवश
अपनी ही असफलताओं से
भर भर जय जीवन का आँगन
इस जीर्ण जगत के पतझर में
अभिशप्त तुम्हारा कवि जीवन।' ।

4. रूस तथा मार्क्स का गुणगान -

डॉ. सुमन मार्क्सवाद के प्रशंसक रहें। मार्क्सवादी विचार दर्शन का जन्म पश्चिम युरोप के धरतीपर हुआ। मार्क्सवादी विचारदर्शन को व्यावहारिक सिध्दी रुसमें प्राप्त हुई। यह विचार दर्शन एक आंतरराष्ट्रीय विचार दर्शन हैं। जिसका उद्देश संसार के समस्त श्रमिक, दलित वर्ग की मुक्ति के लिए संसार को समझना और उसे बदलना हैं। सन 1917 में रुसमें क्रांति हुई, जिसमें उनको पूरी सफलता प्राप्त हुई। उस विजय का वर्णन करते हुए सुमन जी ने अपनी भावना को व्यक्त किया हैं-

'भीषण तोपें बम हत्यारे
छिप गये कहीं मुख मोड से
आश्चर्य विश्व ने कर लिया विजय
हँसिए और हथौडे से।' 2

सोवियत रुसके क्रांतिने श्रमिक वर्ग के जीवनमें एक नयी ज्योति जगा दी। इसे पश्चात युगों युगोंसे शोषित शक्तिहीन के मनमें एक नयी आशा पैदा हुई।

कवि सुमन मार्क्सवादी सिध्दांतोंमें आस्था रखनेवाले एक नवोदित कलाकार है, जिनकी वाणी ओजस्वी है। सोवियत रुस से संबंधित अनेक कविताएँ प्रलयसृजन में संग्रहीत हैं।

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 12
2. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 116

जैसे -

'नव संस्कृति के अग्रदूत हे
पद दलितों की आशा
एक तुम्हारी गतिपर अटकी
मानवता की श्वास।' 1

सोवियत समाजवादी जनशक्तिमें कवि की अनन्य आस्था हैं। सुमन जी जर्मन युध्द आरंभ होने पर एक मास पश्चात रचित कविता के अंश इसप्रकार -

युग युग की शोषित जनता के
ओ, नव स्वर्णिम भोर
लगी हुई अगणित आँखे
आज तुम्हारी ओर।' 2

सुमनजी रुसको नयी संस्कृति के अग्रदूत और दलित मानव के कल्याण के रुपमें देखते हैं, आज संसार तुम्हारी ओर आशा से देख रहा हैं। इस युध्दमें फैसला होगा कि जय मानवता की होगी या दानवता की।

कवि की धारणा हैंकि, सोवियत जनता का मनोबल अजेय हैं। उसे शस्त्रोंद्वारा पराजित नहीं किया जा सकता। जब रुसपर आक्रमण होता हैं तब कवि कहता हैं -

'अच्छा हुआ परिक्षा आई, लेगी दुनिया जान
इन मजदूर किसानोंका होता क्या महाप्राण
हँसिया और हथौड़ा अबतक हुआ नहीं पामाल
यह पानी से नहीं, खून से ही था झंडा लाल।' 3

सुमनजी रुसी सेना को सर्वहारा वर्ग के रुपमें देखती है, इनकी विजय अवश्य होगी। इन मजदूरोंके एक एक बूँद खून में लाखों लोगों का विश्वास छिपा हैं। इतिहास साक्ष हैंकि, कभी सत्य और न्याय की कभी पराजय नहीं होती।

'कोना कोना दलित विश्व का आज तुम्हारे साथ
विजयपताका लिए बढेगा, दिए हाँथमें हाथ
एक रक्त की बूँद तुम्हारी लाखों का विश्वास
कभी हुआ भी है? या होगा, न्याय सत्यका -हास।' 4

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 58
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 58
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 58
4. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 58

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

प्रगतिवादी कालमें हिंदी अनेक कवियोंमें रुसके प्रति प्रेम का ज्वार उमड़ आया। उस समय हमारा देश खराब हालत से गुजर रहा था। रुस ही एक ऐसा देश था जोकि समस्त श्रमिक दलितों एकमात्र प्रतिनिधित्व करनेवाला था।

'दुनिया ने देखा क्या ऐसा जंग कभी लासानी
एक एक सोवियत सैनिक है सवालाख का सानी
मानवता की बलिवेदीपर शीश निछावर जितने
हुए कभी क्या कहीं आजतक हँस हँसकर बलि इतने।' 1

सुमनजी कहते हैंकि, सोवियत देश एक ऐसा देश है जहाँपर सोने चांदीसे दास नहीं खरीदे जा सकते। यहाँ दिनरात मेंहनत करनेवाले की रोटी को शोषक वर्ग नहीं छीन सकते। यह कविता की तीर्थभूमि है, जहाँपर अन्न वस्त्र, और आवास की सुविधा सभी लोगों को हैं। साम्राज्यवाद को नष्ट करनेवाला रुस प्रथम देश हैं।

तानाशाह हिटलरने दस सप्ताहमें मास्कोपर विजय प्राप्त कर लेने की घोषण की थी, लेकिन वह नाकामयाब रहा। इस पर कवि कहते हैं -

'दो सौ वर्षोंकी औद्योगिक उन्नति काम न आई
बीस वर्ष के पठ्ठेने जब निज तलवार उठाई
लाशों से पट गई धरित्री बही खून की नदियाँ
कभी सोवियत रुस लड़ा था, याद करेगी दुनिया
अच्छा हुआ ढहे सब खंड़हर, दुनिया नई बसेगी
लाल सैनिक लाल निशान, आँखोमें लाल सुरुर है
दस हप्ते दस साल बन गये
मास्को अब भी दूर हैं।' 2

सुमन जी सोवियत की विजयमें संसारभर के श्रमिकोंकी विजय देखता हैं। उसकी विजय उसके लिए फासिस्तवाद और साम्राज्यवाद पर जनवाद की विजय का प्रतीक हैं। अतः समाजवाद की विजय होगी।

डॉ. सुमन ने रुसकी खूब प्रशंसा की है। इसका कारण हैंकि, समतावादी भावना, मजदूरोंके प्रति स्नेहभाव और सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति आदि बातोंने उन्हें प्रभावित किया और अपने देश की दयनीय अवस्था देखकर पूँजीवादी और सामंतवादी की शोषणनीति को देखकर रुसकी साम्यवादी व्यवस्थाका

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 64
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 65

गुणगान करते हैं। और अपने देश के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता हैं।

5. **शोषकों के प्रति आक्रोश -**

साम्राज्यवादी, पूँजीवादी, सामंतवादी मानवताके महान शत्रु है, स्वतंत्रता के विरोधी है और मानव के विकासमें सबसे बडे बाधक है। साम्राज्यवादमें बडे देश छोटे देशोंपर आतंक जमाये हुए हैं। उनकी मजबूरी का फायदा उठा रहे हैं। सामंतवादी व्यवस्थामें समाज के उच्चवर्गों के लोग निम्न स्तर के लोगों का शोषण कर रहे हैं। उद्योगों और कारखानों के जरिए पूँजी के धाकपर गरीब लोगोंका शोषण कर रहें हैं।

डॉ. सुमन सदैव इस व्यवस्था के खिलाफ रहे। द्वितीय महायुध्द के समाप्ति के बाद भारत, चीन, जावा, वियतनाम आदि दक्षिण एशिया के अनेक देशोंमें साम्राज्यवाद के विरुध्द आंदोलन हुए। विश्वास बढता ही गया नामक काव्यसंग्रह की कविता नई आग है में कवि कहता हैं -

'हिटलर तोजो मुसोलिनी ने
अंजुली भर भर उलीचा
पर न बुझी यह
स्वयं बुझे वे, जिन हाथोंमें
मानवता का हृदय को चीरकर इसको सींचा।' 1

हिटलर और मुसोलिनी की साम्राज्यवादी कुप्रवृत्तिके कारण अनेक देशोंको कष्ट उठाने पड़े। लकिन उनकी सत्ता की लालसा बढती गई। जिसके कारण नरसंहार हुआ। सुमन का मत हैंकि प्रवृत्तिको नष्ट करने के लिए मानवता के बीज बोना हैं।

यह आग जावा, सुमात्रा, मलाया, इंडोनेशिया में फैलती गई। भारतीय जनता को इस मुक्ति यज्ञमें पुरी शक्तिसे हाथ बटाने के लिए कहते हैं।

'भारत मेरे
चालीस कोटि जनों के नायक
देश देशकी मूक पंगु
जनता की आशा, भाग्य विधायक।' 2

स्वदेश प्रेमी सुमनजी साम्राज्यवादी नीति के विरोध के लिए भारतीय जनता को मानवता की रक्षा के लिए पुकारते हैं। उनका विश्वास हैं कि, भारत कभी सत्य अहिंसा, न्याय के पथ से नहीं हट सकता।

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - 27
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 30

सुमनजी ने 'आज देश की मिट्टी बोल उठी' कवितामें नाविक विद्रोह ओजस्वी क्रांतिकारी रुप चित्रित किया है-

शोषक अंग्रेजोंको ललकारते हुए वह कहते हैं -

'घृणित लुटेरे, शोषक समझापर धन हरण बचौती
जर्ज कंकालों पर वैभव का प्रासाद बसाया
तेर कारण मिटी मनुजता, माँग माँग कर रोटी
प्राण प्राण में आज रक्त की सरिता खौल उठी है
आज देश की मिट्टी बोल उठी हैं।' 1

सुमनजीने अंग्रेजों के व्यवहार, अत्याचार का सही चित्रण किया। उनका कहना हैंकि, अंग्रेजोंके गलत नीतियों का परिणाम भारतको भुगतना पड़ा। भारत जैसे नंदनवन को उन्होंने दावानल बना दिया।

डॉ. सुमन ने 'गुनिया का यौवन' नायक कवितामें व्याप्त विषमता और आर्थिक असमानता का चित्रण किया -

'मुझमें तो अब भी यौवन है अब भी अंगोंमें एक पूलक
अब भी अधरोंमें अरुणाई अब भी पुतलीमें एक चमक
अब भी कंपित कुचकलश देख, आँखे जाती है फिसल फिसल
अब भी अलिंगन चावपूर्ण मेरा मन हो उठता चंचल,
पर यह गुनिया समवयस हुई दो ही दिनमें इतनी जर्जर
किसने इस हरेभरे उपवन को आह बना डाला उसर।' 2

गुनिया के माध्यमसे सुमनजी समाजमें व्याप्त संपन्नता और विषमता का चित्र प्रस्तुत करते हैं। कवि ने स्वयं को सामंतवादी समाज का और गुनिया को समस्त शोषितों की प्रतिमूर्ति माना हैं। उनका कहना हैंकि, आज भी पूँजीवादी और सामंतवादी व्यवस्था के कारण कितनी नारियाँ गुनिया जैसा जीवन व्यतित कर रहीं हैं।

कवि सुमन सर्वहारा वर्ग को अपने कर्म के प्रति सचेत करते हैं -

'आओ वीरोचित कर्म करो
मानव हो कुछ तो शर्म करो
यों कब तक सहते जाओगे
इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो।' 3

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 40
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 28
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 91

इसमें कवि साम्राज्यवादी अंग्रेजों के विरुध्द जनतामें विद्रोह की चिनगारी फैलाता हैं। परवशता के जीवन से मुक्ति पाने का संदेश देता हैं।

पूँजीपतियोंके विरुध्द विद्रोह करते हुए सुमन कहते हैं -

'जिन नींवों के निर्माण में
कितनी लाशोंपर लाश ढही
युगयुग तक शोषण कर फिर भी
बुझ पाई जिनकी प्यास नहीं
उन प्रासादों के ईटोंमें
जर्जर खंडहर खंडन भर दो
मेरे स्वर में जीवन भर दो।' 1

अंग्रेज और भारतीय सामंतवादी, पूँजीवादियोंके प्रति क्रोध व्यक्त कर कवि उन्हें नष्ट कर डालना चाहता हैं। इनके गगन को छूनेवाले महल गरीबोंके रक्त से ही बने है। इनके शोषक अत्याचार को उखाड देने की तीव्र इच्छा कवि व्यक्त करता हैं। उनका विश्वास हैंकि जब इस भावनासे सब परिचित होंगे तो पुरुषत्व की भावना जाग उठेगी तब उन्हें कोई भी रोक नहीं सकेगा। इस भावना के जग जाने के बाद उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

पूँजीवाद की वैषम्यपूर्ण स्थिति का यथार्थ चित्रण कवि ने इसप्रकार किया हैं -

'पिताओं की सहेजी थातियों को छीन लेता था
किसानों के घरोंके शेष दाने बीन लेता था
श्रमिकों की रक्तमज्जासे रंगी जिसकी हवेली थी।' 2

साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का जहर संपूर्ण देशमें फैल चुका हैं। कवि कहते हैं -

'इतनी बडी दुनिया
कुछ सरमायेदारों, इजारेदारों के
हवाले कर दी गई है
बारुद के झाड में भुनकर
कोपलों की मासूम किरचें
हवामें छितरा गई है
माँ की कोख पर
संगीनों के स्मारक।' 3

---

1. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 78
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 105
3. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 77-78

प्रस्तुत कवितामें सुमनजी के मनोभाव कुछ थोड़े लोगों के प्रति हैं, जिनके कुकर्म से समग्र संसार जल रहा हैं।

सामंतों और पूँजीपतियों के प्रति सुमन व्यंग्य करते हुए कहते हैंकि, भाई तुम बड़े ईमानदार दिलके हो देशमें भूखमरी फैली हैं और तुम ऊँची पकवान, सिगारेट से मन बहला रहे हो। जब कि जनता त्राहि त्राहि कर रहीं हैं। जनता के सुखदुख से तुम बचके रहते हो। अपनी दुनिया अलग ही बसाते हो। सुमन जी इन अमानुष तत्वों से सदा सावधान रहने की प्रेरणा देते हैं।

मार्क्स साम्राज्यवाद, सामंतवाद, पूँजीवाद के विरोध में इतिहास की इस गति को उलट देना चाहते थे। सुमन ने इस गतिब को समझकर इसके विरोधी भावना अपने कवितामें व्यक्त करते थे। ये कभी नहीं हो सकेगा की समाज के वर्ग एक दूसरे के जान पर खेलकर अपना वैभव बढाने की कोशिश करें तो दूसरा रोये पछताये। अतएव वर्गभेद को मिटाने की इच्छा कवि करता है, और उसके लिए संदेश भी देता है

6. **शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति और क्रांतिका संदेश -**

सुमन जी ने पूँजीवादी साम्राज्यवादी आर्थिक राजनीतिक शोषण शासन की नीतियों के कारण जगभर के निर्धन एवं असहाय मानवपर होनेवाले अत्याचार और अभावग्रस्त जीवन का चित्रण किया। उन सभी शोषित और सर्वहारा वर्ग के प्रति एकता लाने का, और अन्याय के विरुद्द संघर्ष करने की प्रेरणा देने का स्तुत्य प्रयत्न किया।

शोषितों के प्रति सहानुभूति रखना कवि का प्रधान स्वर हैं। उसी तरह सर्वहारा वर्ग के लोगों के मनमें एकता और जागृति लाने का प्रयास कवि ने अपनी प्रेम प्रगतिवादी कविताओंके माध्यमसे किया हैं।

'लो समय ले रहा है करवट
इतिहास ले रहा अंगड़ाई
शोषक वर्गोंकी आँखोमें
अब भी खुमार की जमुहाई
सुधबुध विस्मृत कर पग कंपित
सुन रहे खडे भौचक्केसे
जनगढ के सिंहद्वार पर जो
बजती नवयुग की शहनाई

बलिदानी! आज परिक्षा दो
बलि की शुभ बेला आ पहुँची।' 1

कवि का विश्वास हैंकि, शोषकों के द्वारा शोषण की घिनौनी प्रक्रिया तभी तक चलती है, जब तक शोषित जन परस्पर विभक्त रहते हों और जब तक उन्हें अपनी शक्ति का अंदाजा नहीं आता। जब उनमें एकता की भावना आ जायेगी तो कोई भी उनका दमन नहीं कर सकेगा।

'जीवन के गान' काव्यसंग्रह में प्रगतिशील स्वर स्पष्ट हो जाता हैं। उनका मत था कि मानव संघर्ष की स्वतंत्रता का बीज श्रमिक वर्ग के सामूहिक संघर्षमें हैं। शोषितों के प्रति सुमनजी के भाव इसप्रकार -

'इनमें जीवन का बंधन भी
इनमें जीवन का क्रंदन भी
जग को सुख स्वर्ग बनानेमें
ये भी मुझसे ही दीवाने
ये मेरे जीवन के गाने।' 2

कवि दलित वर्ग से अपनी तुलना करते हैं, जिनमें वे जीवन का क्रंदन और बंधन भी देखते हैं। जगत् को स्वर्ग बनाने की इच्छा जैसी शोषितों में विद्यमान है वैसी भी कवि की भी इच्छा हैं।

इसलिए कवि उन्हें ललकारता हैं -

'मनमानी सहना हमें नहीं
पशु बनकर रहना हमें नहीं
विधी के मत्थे पर भाग्य पटक
इस नियति नटी की उलझनसे
विद्रोह करो विद्रोह करो।' 3

बहुत पुण्य कर्मों के बाद मनुष्य जन्म मिला हुआ है। उसे पशु जैसा कायर बनकर व्यर्थ नष्ट कर देना उचित नहीं।

कवि सुमन देश के युवा वर्ग और शोषितों को बलिदान देने के लिए बुलाते हैं। उनका अटल विश्वास हैंकि, क्रांतिके पश्चात नए युग का स्वप्न पुरा हो जायेगा -

---

1. डॉ. सुमन - पलयसृजन - पृष्ठ 57
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 25
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 91

'प्रलय मचा दो आज कहाँ तुम
आज तुम्हारी ही कंधोंपर
इस ज्वाला की जिम्मेदारी
अब एक पल भी बुझ पाए
मुक्ति दूत-सी यह चिनगारी
कंकालों के नींव पर खड़े
विश्व साम्राज्यवाद की
आज ईंट से ईंट बजा दो।' 1

इस दृष्टि से प्रगतिवादी कवि सुमन सर्वहारा वर्ग व निम्नस्तरके लोग किसान, मजदूर, नौकर बाबू आदिमें जागृति उत्पन्न करना आवश्यक मानते हैं।

श्रमिकोंके प्रति अपनी हमदर्दी और स्नेह दर्शाते हुए कवि कहते हैं -

'श्रम सीकर से लथपथ चेहरे
इनको चूमो
गंगा जमुना की लोल लहरियों से बढ़कर
माँ-बहनोंकी लज्जा जिनके बलपर लक्षित
बुन चीर द्रौपदी का हरबार बढ़ाया है
कुश कंटक से क्षत विक्षत पग
इनको चूमो।' 2

दिनरात परिश्रम करके धन-धान्य से संपन्न बनानेवाले मजदूरोंके प्रति कवि की गहरी आस्था हैं। वे कहते हैं - ये श्रमिक बंधु हमारी हरतरह से सेवा करते हैं। खेतोंमें काम करके अनाज पैदा करते हैं और कल कारखानोंमें मेहनत करके दैनिक आवश्यकताएँ कपडा, आवास आदि के लिए साधन उत्पन्न करते हैं। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति वे लोग करते हैं। इसलिए उनका महत्व हमारे लिए गंगा जमना से बढ़कर हैं।

डॉ. सुमन शोषितोंके प्रति सहानुभूति दर्शाते हुए उन्हें क्रांतिके प्रति जागृत करते हैं। क्रांतिसे तात्पर्य हैंकि, समाजमें अपने अधिकारोंमें इस बात पर विशेष ध्यान दिया हैं। उनका विचार हैं जो जलता हैं वह बुझता भी शीर्ष है, हम गरीबों की आह को नहीं दबा सकते। इसलिए आज समाजमें समाजव्यवस्था अपने अंर्तद्वंद्व की प्रेरणासे अपना अंत कर भावी समाज व्यवस्था को जन्म देनेकी ओर अग्रसर हो रही हैं। राष्ट्र और समाज की नवजन्मदात्री के लिए सर्वहारा की क्रांति आवश्यक हैं। सर्वहारा

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 31-32
2. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 11

वर्ग गरीब किसान और मजदूरों का दलित, शोषित जीवन, इस जीवनमें असंतोष की चंचलता साहित्य मूल क्रांतिकारी उपकरण होंगे।

7. सामाजिक समस्याओंका विश्लेषण -

कवि सुमनने अपनी प्रगतिवादी कवितामें सामाजिक समस्याओंका विवेचन किया। उस काल की महत्वपूर्ण घटनाएँ, बंगाल का अकाल, गांधीजी की हत्या उसी तरह उस कालीन महत्वपूर्ण सहयोग देनेवाले साहित्यकारोंकी प्रशंसा अपने काव्य में की हैं।

क) बंगाल का अकाल :

बंगाल में 1943 में भयानक अकाल पडा था, उसका यथार्थ चित्रण कवि अपने काव्यमें करते हैं। अकाल का वर्णन अब सुनते हैं तो अनायास कह उठते हैं -

'हाय, सुन रहे कलकत्तेमें फैला अकाल कर
काल-गाल में समा गए, कितने माई के लाल
गलियों, सडकों, फुटपाथोंपर क्षुधाग्रस्त बेहाल
जगह जगह पर तड़प रहे है, मानव के कंकाल।' 1

उस करुणाजनक भीषण अकालमें असंख्य मनुष्य मृत्यु की खाईमें समा गये।

'पेट पीठ का पता नहीं है
रहा न तनमें चाम
सुबह कहाँ! जिनके जीवनमें
रही शाम ही शाम।' 2

वर्तमान समाज तथा राष्ट्र, विदेशी सत्ता की अवहेलना करते हुए कवि उन्हें पत्थर दिल मानता हैं। इस कारुणिक दशा को देखकर सब आँख मूँद कर बैठे है।

कवि कहता है -

'लानत है उस हीन राष्ट्र पर
जो इस तरह अनाथ
बैठा देखा करे तमाशा
धरे हाथ पर हाथ।' 3

सुमन जी स्वशासन के महत्व का अनुभव करते हैं। उनका कहना है, अगर ये अपनी सरकार होती तो शोषक गरीबों को इस प्रकार नहीं लूट पाते -

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 75
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 76
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 82

'तो क्या कभी मुनाफाखोरों
की यह चलती चाल?
मरते लोग सड़ा करते यों
कोठरोंमें माल?।' 1

सुमन जी भारतवासियों को ललकारते हुए कहते हैंकि हमें उनके प्राणों की रक्षा करनी होगी तथा भूखोंको रोटी देनी होगी।

ख) **महात्मा गांधी की हत्या :**

सभी प्रगतिवादी कवि गांधीजी के अहिंसात्मक तत्व भले ही सहमत नहीं थे, लेकिन उनकी साम्राज्य विरोधी भावना, शोषितों के प्रति स्नेहभाव होने के कारण उनके व्यक्तिमत्व ने कवियों के सदैव प्रभावित किया। धार्मिकता के न्यायपर हुई उनकी हत्यासे सभी कवि प्रक्षुब्ध बन गये।

डॉ. सुमनने इस हत्याको मानवता का वध मानते हुए भावनाशील स्वरमें लिखते हैंकि, -

'विश्वास नहीं होता सचमुच
क्या सुना आज इन कानों ने
मेरे बापू तुम नहीं रहें?
युगयुग के बापू नहीं रहें?
जन जन के बापू नहीं रहें।' 2

गांधीजीके प्रति कवि के मनमें अपार श्रध्दा थी। उनके विचार तथा दलित शोषितों के लिए किये गए कार्यसे सुमनजी प्रभावित हुए। इसलिये वे गांधीजीको राष्ट्रपिता के अलावा युगयुग के पिता कहते हैं। उनकी हत्यासे कवि के मनपर गहरा आघात हुआ और श्रध्दांजली के रुप में अपने भाव कवितामें प्रगट किये।

'तुम अप्रतिहत चल रहे
विघ्न बाधाओं को कर चूरचूर
अधिकार कर्म का लिये
प्राप्तिफल आशा से सर्वथा दूर
मौलिक अभियान तुम्हारा यह युग के कर्मठ
डगमग डगमग अहिकोल कमठ
नप गए तुम्हारे तीन डगोंमें नभ जल थल
नयनोंमें आत्मप्रकाश प्रबल

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 8।
2. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 96

'जल गया निशा का अहंकार
तम तार-तार।' 1

गांधीजी के नेतृत्वसे भारत की सोई चेतना अपने संपूर्ण इतिहास सहित सजीव हो गई। युग पुरुष गांधीजी को श्रध्दफूल प्रस्तुत करते हुए कवि कहते हैं -

'कितनी सदियों के पुण्य फले
तब तुम आए
धरती के जागे भाग
मुक्तिके घन छाये
सौभाग्य हमारा
हांड मांस का तन धरते
अपनेसाही तुमको
देखा चलते फिरते
विश्वास हो गया
रामकृष्ण की गाथा पर
अमिताभ और ईसामसीह
की भाषा पर।' 2

सुमन पश्चाताप भरे स्वरोंमें कहते हैंकि, भारत भूमिपर आपका अवतार अनेक पुण्य कर्मोंके बाद हुआ। वर्तमान भारत की स्थिति देखकर कवि पुनः उन्हें पुकारते हैं, उनका कहना हैंकि, हे युग पुरुष जन नायक शोषितों के उध्दारक अब कितनी सदियों के बाद फिर पृथ्वी पर जन्म लेंगे।

गांधीजीका सपना रामराज्य का था। लेकिन वह पूरा न हो सका। गांधीजी के मरणोपरांत कुछ ऐसे लोग पैदा हुए जो रक्षक के स्थानपर भक्षक बने।

कवि सुमन भारतमें व्याप्त स्वार्थ लोलुपता, सत्ता की लालसा, विषमता को देखकर गांधीजी को याद करके कहते हैं -

'बापू
हम बहुत शरमिंदा हैं
तुम्हारे सपनों का
भारत न बना पाए
तुम तो हमारी
सुख सुविधा हेतु
कीमत चुका गये।' 3

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 88
2. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 83
3. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 17

ग) साहित्यकारों की प्रशस्तियाँ -

सुमनजी की कविताओंमें कुछ ऐसी भी कविताएँ है, जोकि साहित्यकारों की जयंति के समयपर लिखी गयी। इनकी विशेषता हैं - इन लोगोंको साहित्यकार की अपेक्षा जनता के प्रतिनिधि के रुपमें वर्णित किया। इसमें स्व. रवींद्र, स्व. प्रेमचंद, निराला आदि हैं।

स्वर्गीय रवींद्र के प्रति - पराधीन जीवन की आशा

'मृत के जीवन प्राण
एक तुम्हारे बलपर
चलते थे हम सीना तान
डगमग पग कंपित कर
वाणी मूक त्रस्त असहाय
तमसावृत पथपर न सूझता
कोई आज उपाय।' 1

कवि उन्हें प्रार्थना करते हैंकि -

भ्रांति भर जग के जीवन में
फैली आज अशांति
क्या न उसे फिर दे पाएगा
शांति निकेतन शांति।' 2

प्रेमचंद के प्रति -गुरुदेव टैगोर की तरह कवि स्वर्गीय प्रेमचंदजी के प्रति अपने आदर भाव प्रगट करते हैं -

'पद दलित देश के स्वाभिमान
जनयुग जागृति के प्रथम चरण
तुम श्रमिक वर्ग के श्रम सजीव
नवयुग संघर्षों के प्रतीक
हे व्रती तुम्हारें व्रतमें संचित
कोटि-कोटि कंठों की वाणी अनिर्बंध
हे कृती, तुम्हारी कृतिमें मिलती
मातृभूमि की मिट्टी की सोंधी सुगंध।' 3

निराला के प्रति -

'हे चिर - विदग्ध
शैशव से ही कुछ मूक चिताओं के सिंगार

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 48
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 49
3. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 57

लेकर तुम दह के बन अंगार
निर्धूम प्रज्वलित वन्हि वेष
करने को आतुर नामशेष
युग युग के कल्मष अनाचार।' 1

9. **आस्था और विश्वास के स्वर -**

प्रगतिवाद की एक विशेषता यह भी हैंकि, आस्था और विश्वास का स्वर उसमें व्यक्त हुआ हैं। कवि सुमन भी इस विशेषता के समर्थक रहे। उनकी कविताओं में भी इसे प्रधानता मिली हैं।

कवि सुमन का मानवीय शक्ति पर पूरा विश्वास हैं। समयानुसार समाजका रुप अपने आप बदलता जायेगा। किंतु मानव को सुधारने के लिए प्रयत्न करने होंगे। इसके लिए समाजमें आवश्यकतानुसार क्रांति के माध्यम से आडंबर, जर्जर रुढ़ियाँ विषमता को दूर किया जा सकता हैं। कवि उन दीवारों को तोड़ना चाहते हैं जो कि हमारे मार्गमें प्रतिरोधक बनी हैं।

सुमन जी का कहना है, मानव जीवन यात्रामें अनेक कठिनाईयाँ भरी हुई है। वही मनुष्य कर्मठ है जो सारे संकटोंको पार करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़े।

'जीवन के गान' में कवि सुमन का आस्था और विश्वास का स्वर व्यक्त हुआ हैं -

'क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथपर जो मिले
यह भी सही वह भी सही
चाहे हृदयको ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कर्तव्य पथसे
किंतु भागूँगा नहीं
वरदान मांगूँगा नहीं।' 2

कर्मवाद का समर्थन करनेवाले सुमनजी भाग्यवाद पर विश्वास नहीं करते। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण हैंकि, उतार-चढाव, सुख-दुख जिंदगी में आते ही रहेंगे। लेकिन उनसे डरना नहीं चाहिए, कर्तव्य पथसे हटना नहीं चाहिए। 'मैं निराश न हो सका कवि इसप्रकार के भाव व्यक्त करते हैं

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 6।
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 34

'चिर वेदना अभिभूत मैं
नवक्रांति का नवदूत मैं
होगा बदलना जीर्ण जग
यह एक आस न खोसका
मैं तो निराश न हो सका।' 1

मनुष्य को ध्येय के प्राप्ति में अनेक बाधाएँ निर्माण होती हैं। कवि उससे निराश न होने का संदेश देता हैं। यह नियति का नियम हैं जो जन्मा हैं उसे एक दिन नष्ट होना हैं। रात दिन, सुखदुख आते रहते हैं।

सुमन जी का विचार हैंकि, मनुष्यके जीवनमें निर्माण होनेवाली अड़चनें उसके विकासमें बाधक नहीं हो सकती जैसे -

'विश्व तुम्हारे आँगन में
होते हैं सृष्टि प्रलय, परिवर्तन
जबतक हाथ पैर चलते हैं
जब तक वाणी बोल रहीं है
अथ इतिहीन कर्ममय पथपर
भार नहीं बन सकता जीवन
छोटे मोटे आघातों से
हार नहीं सकता मेरा मन।' 2

कवि सुमनजी का सामूहिक जनशक्ति पर भी अटल विश्वास हैं।

'कभी हमारी भी धरती पर
सुख समता के फूल खिलेंगे
गली गली जगमगा उठेगी
स्नेहभरे दीपक छलकेंगे,
नयनोंकी पुतली में झलकेगी
प्रकाश की लाली
फिर आ गई दिवाली।' 3

इसमें कवि आशा और आस्था का स्वर व्यक्त करते हैं। उनका विश्वास हैंकि, एक दिन ऐसा समय आयेगा जबकि सामाजिक विषमताओं, अत्याचारों की समाप्ति होगी, धरतीपर सुख समता आ जायेगी। यदि मानव जाति को अपनी शक्तिपर भरोसा है तो वे कभी पीछे नहीं हटेंगे।

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 34
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 11
3. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 41

जीवन को गतिशील माना गया हैं और गति को ही जीवन माना गया हैं। चलना यदि जीवन है तो रुकना मौत। इसलिए कवि बिना उद्देश के चलना चाहते हैं।

कवि सुमन का विश्वास हैंकि, यदि इस जीवन यात्रामें आगे बढने की लगन है तो मंजिल कितनी भी दूर क्यों न हो उसे प्राप्त करना। निरंतर गतिशील रहनेमें जीवन की सार्थकता निहित हैं।

कवि सुमन मंजिल तक पहुँचने के बाद आराम करना चाहते है -

'मंजिले और जो कट जाय, तो आरम करुँ
बडी आशाओं, उमंगों से चला था पथपर
कभी पैदल, कभी अरमानों के उड़ते रथपर
वज्र कडके तो रगों को नई रफ्तार मिली
लू की लपटोंमें सिसकती हुई बहार मिली
कहर ढाती हैं फिजाएँ तो सुदिन अच्छा है
घुमड आई हैं घटाएँ तो सगुन अच्छा हैं
ये जरा और जो छूँट जाय, तो आराम करुँ
मंजिले और कट जाय तो आराम करुँ।'[1]

आस्था और विश्वास का स्वर सुमनजी की प्रत्येक कृतियों में परिलक्षिता होता हैं। जीवन के प्रति आस्थामें उनका पूर्ण विश्वास हैं।

10. **जगत् के विकास संबंधी विचार -**

इस विश्व की उत्पत्तिके पीछे किसी अलौकिक सत्ता और भगवान की लीला नहीं। मार्क्स की तरह सुमन जी की भी यही धारणा हैं। जल, वायु, आप, तेज, पृथ्वी पंचतत्व पर सुमनजी विश्वास करते हैं।

लेकिन सुमन जी भारतीय कवि हैं। इसलिये ईश्वरी अस्तित्व है या नहीं इस झगडे में वे नहीं पड़ना चाहते। बल्कि पुरुषार्थ, कर्म बलिदान जैसे मानवीय आदर्शोंपर अपना ध्यान देते हैं।

सुमनजी ईश्वरी सत्तापर आशंका प्रकट करते हुए कहते हैंकि, इन गरीब श्रमिकोंकी दुखपूर्ण कर्कश कराह सुनकर नहीं ईश्वर इनका दुख दूर करता। इसलिए वे जीवनमें कड़ी मेहनतपर विश्वास करते हैं।

---

1. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 155-156

संसारमें सबसे बडा दुख पेटका हैं। और दुख तब बढ जाता हैं जब किसीके घरमें पकवान बनते है तो किसी के घरमें खाने के लिए कुछ भी नहीं।

सुमनजी मंदिरों और मसजिदोंपर अविश्वास प्रगट करतें हुए लिखते हैं-

'जीवन भाग गया है
मंदिरों मसजिदों और गिरजोंसे
जम-सी गई है
अर्चना की अर्चियों में
ठिठूरी राख
भक्तों से अधिक
घंटो की टनटनाहट में
हरारत हैं।' 1

आज जो हमारी धार्मिक भावनाएँ हैं, वे दिखावा मात्र हैं। पूजा, नमाज, प्रार्थना आदि अमीरोंके शौक है, क्योंकि उनके पास वक्तही वक्त रहता हैं। लेकिन गरीबोंके लिए समय का अपव्यय होगा। अगर इतना समय काममें लगया जाय तो हम अपना पेट भर सकते हैं।

सुमनजी कहते हैंकि, मानवकी जीवन यात्रा कंटकोंसे भरी हुई है। परंतु जो मनुष्य जीवनके पथपर सारे अवरोधों को दूर करते हुए संकटोंका सामना करते आगे बढता रहता है, वह अपने जीवनको सार्थक बना लेता हैं।

कवि का मत हैंकि, इस प्रापंचिक संसारमें सबको उलझना पडता हैं। सुख दुखोंको सहना पडता हैं।

मिट्टी की महिमापर प्रकाश डालते हुए कवि कहते हैं -

'एक एक कर याद आ रहे
वे अपूर्व बलिदान
देकर जिन्हें किया था तुमने
नव जीवन निर्माण।' 2

सुमनजीका विचार हैंकि, मिट्टी स्वयं भले ही क्षणजीवी नश्वर प्रतीत हो पर उसका महिमा चिरंजीवी और अनिश्वर हैं।

---

1. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 69
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 59

इसतरह से इस अध्यायमें हमनें प्रगतिवादी काव्य की विशेषताओं के आधारपर सुमनजी के प्रगतिवादी काव्य की विस्तृत चर्चा की। प्रगतिवाद की विशेषताएँ है, प्राचीन रुढियाँ तथा वर्गभेद का विरोध, आर्थिक और सामाजिक शोषण के प्रति विद्रोह, आर्थिक साधन तथा कलासंबंधी विचार, रुस और मार्क्स का गुणगान, शोषकोंके प्रति आक्रोश, शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति और क्रांतिका संदेश, सामाजिक समस्याओंका विश्लेषण, साहित्यकारोंका गुणगान, आस्था और विश्वास का स्वर, जगत की उत्पत्ति एवं उत्थान और पतन संबंधी विचार आदि शीर्षकोंपर सुमनजी के प्रगतिवादी काव्यसंग्रह जीवन के गान, प्रलयसृजन, विश्वास बढता ही गया, वाणी की व्यथा, आदि समग्र रुपसे जानकारी ली।

अंतमें सुमनजी के प्रगतिवादी काव्यसंग्रहों की चर्चासे निःसंदेह हम उन्हें प्रगतिवादी कवि कह सकते हैं।